Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. 22, July-2016, ISSN 2230-7540

"व्यवसाय के विकास में वित्तीय योजना का महत्वपूर्ण योगदान"

Deepti Jothe

Research Scholar (Commerce) Govt. Sarojani Naidu, Girls PG College, Bhopal

शोध सारांश – वित्तीय प्रबंध के लिए, वित्तीय योजनाएं बनाना महत्वपूर्ण भाग है। निर्धारण की यह प्रक्रिया उद्देश्यों, नीतियों, क्रियाविधी, कार्यक्रमों और बजट इत्यादि के माध्यम से यह वित्तीय क्रियायें एक उद्यमी द्वारा तैयार की जाती है। सही वित्तीय योजना एक उद्यमी को उसकी व्यवसाय की आवश्यकता के अनुरूप उसे कार्य करने के योग्य बनाती है एवं साथ ही साथ व्यवसाय में पूँजी के सही मूल्य को लगातार इसके कुशलतापूर्वक संचालन के योग्य बनाती है। वित्तीय योजनाओं में यह महत्वपूर्ण निर्णय जैसे एक व्यवसाय में कोषों की पर्याप्त उपलब्धता एवं उसका कुशलतापूर्वक उपयोग हो रहा है या नहीं यह देखा जाता है। सही निर्णय वित्तीय योजना की महत्ता को आगे बढ़ाता है। सामान्य उपयोग में, एक वित्तीय योजना भविष्य की आय, सम्पत्ति मूल्य और वापसी की योजना की भविष्यवाणी करने के लिए वर्तमान ज्ञात चर का उपयोग करके एक व्यक्ति की वर्तमान वेतन और भविष्य की वित्तीय स्थिति का एक व्यापक मूल्यांकन है। यह एक बजट जो आयोजन एवं व्यक्ति की वित्तीय स्थिति और कभी–कभी एक श्रृंखला को शामिल किया जाता है। जो खर्च और भविष्य में बचत के लिए विशिष्ट लक्ष्यों के रूप में शामिल किए जाते है। एक वित्तीय योजना को कभी–कभी एक निवेश योजना के रूप में की जाना जाता है। लेकिन व्यक्तिगत वित्त में वित्तीय योजना अन्य विशिष्ट क्षेत्रों में इस तरह के जोखिम, प्रबंधन, सम्पदा, या सेवानिवृत्ति पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

शब्दकुंजी – वित्तीय योजना, वित्तीय योजना के प्रकार, अल्पअवधि के वित, मध्ययम अवधि के वित्त।

----------X----------

प्रस्तावना –

शुरूआत करने के पहले यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि ''वित्त'' क्या होता है। वित्त का पता लगाने पर सबूत प्राप्त हुए कि यह पृथ्वी पर मानव जीवन की तरह पुराना है। ''वित्त'' शब्द मूल रूप से एक फ्रैंच शब्द था। 18वीं सदी में यह अंग्रेजी भाषा से अनुकूलित किया गया था। अंग्रेजी भाषा में समुदायों का मतलब ''पैसे का प्रबंधन'' था। तब से इसे अंग्रेजी शब्दकोष में एक स्थायी जगह मिल गई है। आज वित्त न केवल एक शब्द बनकर रह गया बल्कि यह एक शैक्षिक अनुशासन बनकर उभरा है, जिससे आज वित्त का अत्यधिक महत्व बढ़ गया है। वित्त अब अर्थशास्त्र की एक शाखा के रूप में आयोजित किया जाता है। इसके अलावा एक शब्द ऐसा है जो आसानी से वित्त का स्थान ले सकता है वह ''विनिमय'' है। वित्त कुछ भी नहीं है लेकिन यह उपलब्ध संसाधनों की एक मुद्रा है।

वित्त न केवल विनिमय या पैसे का प्रबंधन करने तक ही सीमित नहीं है। एक वस्तु विनिमय व्यापार प्रणाली भी वित्त का एक प्रकार है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वित्त वर्तमान में पैसा, सम्पत्ति, निवेश, प्रतिभूतियों आदि जैसे विभिन्न उपलब्ध संसाधनों के प्रबंधन के लिए एक कला है।

हम वित्त के बिना एक दुनिया की कल्पना भी नहीं कर सकते। दूसरे शब्दों में वित्त हमारी आर्थिक गतिविधियों की आत्मा है। वित्त भौतिक संसाधनों, जो उत्पादक गतिविधियों का प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक है।

वित्त व्यापार के समग्र उत्पादित क्रियाओं को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप कार्य करता है। साथ ही साथ वित्त व्यापार की बिक्री के रूप में व्यापार के संचालन को आगे बढ़ाने, मुआवजा, आकस्मिक व्यय और देनदारियों के लिए आरक्षित है। इसीलिए वित्त आज एक जैविक समारोह और दिन–प्रतिदिन के क्रियाकलापों का अभिन्न अंग बन गया है।

''वित्तीय नियोजन, आवश्यक पूँजी का ऑकलन करने और अपनी प्रतिस्पर्धा का निर्धारण करने की प्रक्रिया है। यह खरीद, निवेश और एक उद्यम के लिए धन के प्रशासन के संबंध में वित्तीय नीतियों को तैयार करने की प्रक्रिया है।''

यद्यपि अपने लक्ष्यों और निवेशों को सही दिशा पर रखने पर एक अच्छी वित्तीय योजना के माध्यम से और लंबी अवधि के वित्त की स्पष्टता के साथ मौजूदा जीवनशैली को बिना किसी बाधाओं के साथ दूर किया जा सकता है।

वित्तीय योजना की प्रक्रिया – यह योजनाएं निम्न चरणों में पूर्ण की जाती है।

www.ignited.in

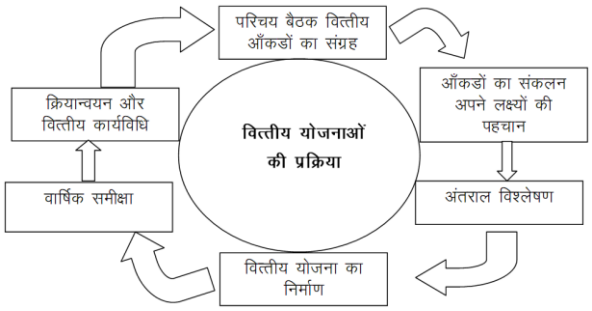

1. परिचय बैठक – वित्तीय आँकड़ों का संकलन

एक व्यवसाय के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की स्थापना को पूर्ण करने हेतु हम अन्य बाह्य व्यक्तियों से मिलते हैं ताकि व्यवसाय से संबंधित वे समस्त तथ्यों को संकलित किया जा सके एवं व्यवसाय के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। इसके लिए एक उद्यमी के द्वारा परिचय बैठक का आयोजन किया जाता है। यह परिचय बैठक अपने लक्ष्यों को पेश करने के साथ–साथ अपने बाद आने वाले वर्षों में व्यवसाय की स्थिति से संबधित होते हैं।

2. आँकड़ों का संकलन– लक्ष्य की पहचान

सामरिक समाधान है कि आप अपनी जीवनशैली के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, वित्तीय संसाधनों का उपयोग करने के लिए कितना सक्षम है। अपने वित्तीय जीवन से संबंधित यह पर व्यापक आँकड़ों को लेकर अपनी स्थिति, दृष्टिकोण और खातों का विश्लेषण कर अपने लक्ष्यों की पहचान की जानी चाहिए।

3. अंतराल विश्लेषण – वित्तीय अंतराल की पहचान

इस स्तर पर हम वित्तीय मुद्दों और अपने वर्तमान और आकांक्षी लक्ष्यों की वजह से उत्पन्न अंतराल की पहचान करते हैं। कार्यवाही की स्पष्टता के लिए, लिखित सिफारिशों के समूह की रूपरेखा और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति का समाधान तैयार करते है। इसके अंतर्गत बड़े पैमाने पर अपने लक्ष्यों में आने वाली बाधाओं एवं कमजोरियों की पहचान कर इन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है।

4. एक वित्तीय योजना का निर्माण

दिए गए विकल्पों में से उनमें से किसी एक का चयन कर आप किस प्रकार अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते हैं। यह रणनीतियों और सिफारिशों का समूह है जहां पर आपके लक्ष्यों की जानकारियाँ रहती हैं। यह एक वैद्य मार्ग है कि एक अच्छी वित्तीय योजना के माध्यम से आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हो। यह विकल्प, जोखिम और अवसर लागत का मूल्यांकन कर एक वित्तीय योजना के निर्माण में मद्द करता है।

5. वार्षिक समीक्षा –

निगरानी और समय समय पर अपनी जानकारियों का संग्रह, समीक्षा और अपनी योजना को संशोधित कर अपनी जीवनशैली को बदलने एवं अपनी योजना में संशोधन कर इसके विकास में मदद करता है। प्रगति की समीक्षा एवं स्वयं के अनुसार इसमें सुधार कर एक वित्तीय योजना में वार्षिक समीक्षा के आधार पर परिवर्तन किए जा सकते हैं।

6. क्रियान्वयन और वित्तीय कार्यवाही–

वित्तीय नियोजन के इस चरण में आप एक कार्य योजना को विकसित कर, अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीके के चुनाव की आवश्यकता होती है। आप अपने तात्कालिन या अल्पकालीन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, अगले लक्ष्यों को प्राप्त करने की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए अपनी वित्तीय योजनाओं को लागू करेंगे इसके लिए आपको अन्य व्यक्तियों की सहायता की जरूरत हो सकती है।

उदाहरण के लिए – आप बीमा संपत्ति या एक निवेश दलाल की सेवाओं को खरीद के लिए शेयर, बांड या म्यूचुअल फंड क्रय के लिए एक बीमा एजेंट की सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं।

शोध के उद्देश्य –

- वित्तीय योजना की प्रक्रिया को जानना
- वित्तीय योजना के प्रकार एवं वित्तीय योजना के तत्वों को जानना।
- व्यवसायों के लिए वित्तीय योजनाओं की महत्वपूर्णता को जानने के लिए।

शोध प्रविधि –

प्रत्येक शोध अध्ययन के लिए आँकड़ों की आवश्यकता होती है। चाहे वह प्राथमिक हो अथवा द्वितीयक इस शोध अध्ययन के अंतर्गत मैंने द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया है जिनके प्रमुख स्त्रोत किताबें, प्रकाशित दस्तावेज, अखबार और इंटरनेट है।

वित्तीय योजना के तत्व – वित्तीय योजना के अंतर्गत निम्नलिखित तत्वों को शामिल किया गया है जो इस प्रकार हैं–

- **वित्तीय उद्देश्यों का निर्धारण** – प्रभावी वित्तीय योजना बनाने के लिए यह स्पष्ट रूप से आवश्यक है कि वित्तीय उद्देश्यों को प्राप्त किया जाए। वित्तीय उद्देश्य कम्पनी के समग्र उद्देश्यों के आधार पर किया जाना चाहिए। वित्तीय प्रबंधन के उद्देश्यों को क्षेत्रों, निवेश वित्त और लाभांश में भी स्थापित किया जा सकता है।
- **पूँजी की आवश्यकताओं का आँकलन** – पूंजी व्यापार के विभिन्न जरूरतों के लिए अत्यंत ही आवश्यक है। अलग–अलग आँकलनों को तय करने के लिए अचल पूँजी और कार्यशील पूँजी का प्रयोग किया जा रहा है। अचल पूँजी जैसे भूमि और भवन, मशीन और संयत्र, फर्नीचर इत्यादि जो कि अचल सम्पत्तियों के अधिग्रहण के लिए आवश्यक है। कार्यशील पूँजी व्यवसाय चलाने के लिए, बैठक के लिए, शेयर, प्राप्य बिल और नकदी की तरह मौजूदा परिसंपत्तियों के आयोजन के लिए आवश्यक है।
- **जारी प्रतिभूतियों के निर्धारण के लिए** – एक कंपनी लंबी अवधि के वित्त के लिए इक्विटी शेयर, पूर्वाधिकार अंश और ऋण पत्रों को बढ़ाने के लिए इन्हें जारी कर सकती है। प्रतिभूतियों को जारी करने से

पहले इसका अनुपात ठीक से निर्धारित किया जाना चाहिए।

- **वित्तीय नीतियों के निर्माण के लिए** – वित्तीय योजना उधार लेने और उधार देने, नकदी नियंत्रण के लिए इसका निर्माण किया जाता है। अल्पकालीन वित्तीय योजना का अधिकतम 1 वर्ष के लिए तैयार की जाती है। और यह वित्त के अन्य क्रियाकलापों से संबधित होती है। यह वित्तीय योजना पूँजी के सही प्रशासन के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लेने और वित्तीय गतिविधियों में समन्वय को प्राप्त करने में मद्द करती है।

वित्तीय योजनाओं के प्रकार –

कंपनी के प्रारंभ होने के बाद वित्त प्रबंधक वित्तीय योजनाओं को तैयार करता है। वित्तीय योजनाओं के प्रकार नीचे विस्तृत रूप से प्रस्तुत किए गए हैं। वित्तीय योजनाओं के तीन प्रकार होते हैं।

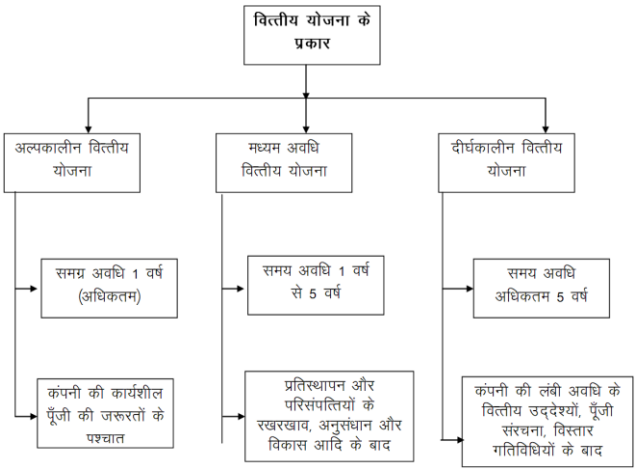

- **अल्पकालीन वित्तीय योजना** – यह योजना अधिकतम 1 वर्ष के लिये तैयार की जाती है। यह योजना कंपनी की कार्यशील पूँजी की जरूरतों के बाद बनायी जाती है।

- **मध्यम अवधि की वित्तीय योजना** – यह योजना कंपनी द्वारा 1 वर्ष से 5 वर्ष की अवधि के लिए तैयार की जाती है। इस योजना को प्रतिस्थापन और परिसंपत्तियों के रखरखाव, अनुसंधान और विकास आदि के बाद बनाई जाती है।

- **दीर्घकालीन वित्तीय योजना** – यह योजना 5 वर्ष से अधिक की अवधि के लिए तैयार की जाती है। यह कंपनी की लंबी अवधि के वित्तीय उद्देश्यों, पूँजी संरचना एवं विस्तार गतिविधियों के बाद बनायी जाती है।

वित्तीय नियोजन के महत्व –

वित्तीय योजना किसी भी व्यवसायिक उद्यम की सफलता के लिए आवश्यक है। निम्न कारण इसकी महत्ता को बतलाते हैं।

- **अधिकतम धन संग्रह की सुविधा** – वित्तीय योजना अपव्यय और पूँजीकरण की स्थिति से बचने एवं व्यवसाय में वित्त का पुर्वानुमान कर अधिकतम धन का संग्रह करती है।

- **उपर्युक्त पूँजी संरचना तय करने में सहायक** – कोष, विभिन्न स्त्रोतों से व्यवस्थित किया जा सकता है। और इसे लंबी अवधि, मध्यम अवधि और छोटी अवधि के कोष के लिए उपयोग किया जाता है। उचित समय पर उचित स्त्रोतों के दोहन के रूप में लंबी अवधि के कोष जो शेयरधारक और ऋण पत्रधारी वित्तीय संस्थानों और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा लघु अवधि से मध्यम अवधि के योगदान के लिए वित्तीय योजना तैयार करना अति–आवश्यक है।

- **परिचालन गतिविधियों में सहायक** – उत्पादन और वितरण की सफलता और असफलता व्यापार के वित्तीय निर्णय पर निर्भर करते हैं। सही निर्णय कंपनी के उत्पादन और वितरण को सुचारू रूप से संचालन के प्रवाह को सुनिश्चित करते हैं।

- **वित्त के समुचित उपयोग में सहायक** – वित्त व्यापार के लिए जीवन रक्त माना गया है। इसीलिए वित्तीय योजना व्यवसाय के निगमीय योजना का एक अभिन्न अंग बन गया है। सभी व्यापार की योजना वित्तीय योजना की सुदृढ़ता पर निर्भर करती है।

- **समन्वय में सहायक** – वित्त व्यवसाय के विभिन्न कार्यक्रमों जैसे उत्पादन एवं बिक्री आदि में समन्वय करने में मद्द करता है।

निष्कर्ष –

किसी भी व्यवसाय के मालिक के लिए, वित्तीय योजना के निर्माण की प्रक्रिया मूल्यवान है। वित्तीय योजना या बजट जिसे कहा जाता है। यह व्यवसाय के दिन–प्रतिदिन के निर्णय लेने में मद्द करता है। वास्तविक परिणाम के लिए पुर्वानुमान संख्या की तुलना समग्र वित्तीय वित्तीय स्वास्थ्य और व्यापार की क्षमता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी अर्जित करता है। यहाँ तक एक कंपनी में प्रत्येक व्यक्ति की जगह कितनी महत्वपूर्ण है। यह सब वित्तीय योजना का अभिन्न अंग है। वित्तीय योजना का मुख्य उद्देश्य पर्याप्त फंड दीर्घकालीन परिसम्पत्तियों की खरीद के लिए, विभिन्न प्रयोजनों के लिए कंपनी में उपलब्ध होना चाहिए। वित्तीय योजना के साथ–साथ यह वित्त के स्त्रोतों को निर्दिष्ट करने की कोशिश करता है। अतिरिक्त वित्त पोषण, अपर्याप्त या धन की कमि किसी भी कंपनी के लिए यह खराब स्थिति मानी जाती है। अगर किसी कम्पनी में अधिशेष धन, वित्तीय योजना, वित्तीय संसाधन बेकार है तब ऐसी स्थिति में कंपनी को अपनी धन–राशि को सही दिशा में निवेश करना चाहिए अन्यथा एक संगठन के लिए यह बड़ी हानिकारक स्थिति है। वित्तीय नियोजन के अंतर्गत अल्पकालिक और लंबी अवधि की योजनाएं शामिल है। दीर्घकालीन योजना, पूँजीगत व्यय की योजना पर केन्द्रित है जबकि अल्पकालीन वित्तीय योजना को बजट कहा जाता है।

एक वर्ष या इससे कम की अवधि बजट में शामिल विस्तृत योजनाओं को इसके अंतर्गत शामिल किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

- अग्रवाल एम.डी. : वित्तीय प्रबंध, रमेश बुक डिपो जयपुर 1997
- Types of financial plans, Image credits © Prof. Mudit Katyani. http://kalyan.city.blogspot.in/2011/11/what-is-financial-planning-meaning.html.
- http://en.wikipedia.org/wiki/financial.plan.
- http://www.managementstudy.guide.com/financial-planning.htm.

Corresponding Author

Deepti Jothe*

Research Scholar (Commerce) Govt. Sarojani Naidu, Girls PG College, Bhopal

E-Mail – deeptijothe89@gmail.com